आश्रय-राग

उत्तर-भारतीय संगीत-पद्धति में प्रत्येक ठाठ का नाम उस ठाठ से उत्पन्न होने वाले किसी राग-विशेष 'जन्य राग' के नाम पर ही देखा जाता है। जिस जन्य (उत्पन्न होने वाले) राग का नाम ठाठ को दिया जाता है, उसी को 'आश्रय-राग' कहते हैं; जैसे 'सा रे॒ ग म प ध॒ नि', इस स्वर-समुदाय से विदित होता है कि यह भैरव ठाठ है। इसका नाम भैरव ठाठ इसलिए रखा गया, क्योंकि इन्हीं स्वरों से और इसी ठाठ से प्रसिद्ध राग 'भैरव' की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार राग भैरव, भैरव ठाठ का आश्रय-राग हुआ।

किसी भी ठाठ से उत्पन्न होने वाले (जन्य) रागों में आश्रय-राग का थोड़ा-बहुत अंश अवश्य दिखाई देता है, किन्तु ऐसा नहीं समझना चाहिए कि आश्रय-राग सभी जन्य रागों का उत्पादक है। जन्य रागों का उत्पादक तो ठाठ ही माना जाएगा।

आश्रय-राग-को ही 'ठाठ-वाचक राग' भी कहते हैं। उत्तर-भारतीय संगीत-पद्धति में कुल दस आश्रय-राग माने गए हैं, जो निम्नांकित तालिका में द्रष्टव्य हैं :-

ठाठ-नाम	ठाठ के स्वर	आश्रय-राग	राग के आरोह-अवरोह
१, बिलावल	सा रे ग म प ध नि सां	बिलावल	सा रे ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रे सा
२. कल्याण (यमन)	सा रे ग म॑ प ध नि सां	यमन	सा रे ग म॑ प ध नि सां सां नि ध प म॑ ग रे सा

Scanned with CamScanner

३. खमाज	सा रे ग म प ध नि सां	खमाज	सा रे ग म प ध नि सां सां नि ध प म ग रे सा
४. भैरव	सा ऱे ग म प ध॒ नि सां	भैरव	सा ऱे ग म प ध॒ नि सां सां नि ध॒ प म ग ऱे सा
५. पूर्दी	सा ऱे ग मं प ध॒ नि सां	पूर्वी	सा ऱे ग मं प ध॒ नि सां सां नि ध॒ प मं ग ऱे सा
६. मारवा	सा ऱे ग मं प ध नि सां	मारवा	सा ऱे ग मं ध नि सां सां नि ध मं ग ऱे सा
७. काफ़ी	सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां	काफ़ी	सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा
८. आसावरी	सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	आसावरी	सा रे म प ध॒ सां सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा
९. भैरवी	सा ऱे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	भैरवी	सा ऱे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां सां नि॒ ध॒ प म ग॒ ऱे सा
१०. तोड़ी	सा ऱे ग॒ मं प ध॒ नि सां	तोड़ी	सा ऱे ग॒ मं प ध॒ नि सां सां नि ध॒ प मं ग॒ ऱे सा

ध्यान रहे कि ठाठ में केवल आरोह ही होता है तथा सातों स्वर पूरे होते हैं, किन्तु राग में आरोह-अवरोह, दोनों का होना आवश्यक है, चाहे स्वर सात हों या कम।

Scanned with CamScanner